Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

मध्यकालीन भारत

(बिहार के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: BRPM03

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

मध्यकालीन भारत

(बिहार के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

BPSC DLP विषय सूची (Contents)

1. मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत **5-14**

1.1 सल्तनतकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत 5

1.2 मुगलकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत 9

2. भारत में तुर्कों का आगमन **15-19**

2.1 तुर्कों के आक्रमण से पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति 15

2.2 महमूद गज़नवी का आक्रमण 15

2.3 मुहम्मद गौरी का आक्रमण 16

3. दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) **20-55**

3.1 गुलाम वंश 20

3.2 खिलजी वंश 25

3.3 तुगलक वंश 31

3.4 सैयद वंश 38

3.5 लोदी वंश 39

3.6 सल्तनतकालीन प्रशासन 41

3.7 सल्तनतकालीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति 46

3.8 सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य 49

4. क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी **56-63**

5. विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य **64-77**

5.1 विजयनगर साम्राज्य 64

5.2 विजयनगर: प्रशासनिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 68

5.3 बहमनी साम्राज्य 72

5.4 बहमनी : प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सैन्य स्थिति 75

6. भक्ति एवं सूफी आंदोलन **78-86**

6.1 भक्ति आंदोलन 78

6.2 सूफी आंदोलन 82

7. मुगल साम्राज्य और शेरशाह **87-126**
7.1 मुगल बादशाह 87
7.2 उत्तर मुगल काल 98
7.3 मुगल प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था 102
7.4 सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 108
7.5 स्थापत्य एवं कला 112
7.6 शेरशाह: प्रशासक एवं सुधारक 119

8. मराठा साम्राज्य **127-135**
8.1 उदय के कारण 127
8.2 शिवाजी 128
8.3 मुगल-मराठा संघर्ष 131
8.4 शिवाजी के उत्तराधिकारी 132

अध्याय
1

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Medieval Indian History)

प्राचीन भारतीय इतिहास की तुलना में मध्यकालीन भारतीय इतिहास से संबंधित ऐतिहासिक सामग्री प्रचुर मात्रा में है। इसका मुख्य कारण प्राचीन काल में ऐतिहासिक ग्रंथों का अभाव या फिर उनकी उपलब्धता की कमी है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास जानने के लिये ऐतिहासिक स्रोतों की कमी नहीं है। इतिहास लेखन में मुस्लिम सुल्तान और उलेमा रुचि रखते थे। मुस्लिम इतिहासकारों ने सुल्तान और उनकी भारतीय विजयों का विस्तृत विवरण दिया है। साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त मध्यकालीन भारत में विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांत, शिक्षित सुल्तानों की आत्मकथा, विजय अभियानों के बाद स्थापित विजय स्मारक, विजय स्तंभ आदि ऐतिहासिक स्रोतों से भी पर्याप्त जानकारी मिलती है।

सल्तनत काल में फारसी और अरबी पुस्तकों की रचना की गई। हालाँकि इनके लेखकों को हम वैज्ञानिक इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रख सकते, क्योंकि वे केवल तात्कालिक शासकों के कार्यकलापों तक ही सीमित थे, परंतु इन रचनाओं से सल्तनतकालीन इतिहास और कालक्रम की पर्याप्त जानकारी मिलती है।

1.1 सल्तनतकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत *(Major Historical Sources of Sultnate Period)*

साहित्यिक साक्ष्य *(Literary evidence)*

फारसी तथा अरबी साहित्य

तुर्क-अफगान शासक मूलत: सैनिक थे और स्वयं शिक्षित नहीं थे। हालाँकि उन्होंने इस्लामी विधाओं और कलाओं को प्रोत्साहन दिया। प्रत्येक सुल्तान के दरबार में फारसी लेखकों, विद्वानों तथा कवियों का जमावड़ा लगा रहता था। उनकी रचनाओं से उस काल के इतिहास की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

तारीख-उल-हिंद

- इस पुस्तक की रचना अलबरूनी द्वारा की गई। वह महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय भारत आया था। वह अरबी और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- अपनी इस पुस्तक में उसने 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदुओं के साहित्य, विज्ञान तथा धर्म का आँखों देखा सजीव वर्णन किया है। इस पुस्तक के अध्ययन से तात्कालिक सामाजिक दशा का पर्याप्त ज्ञान होता है। यह पुस्तक 'किताब-उल-हिंद' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

चचनामा

- यह अरबी भाषा में लिखी गई है। मुहम्मद अली-बिन-अबूबकर कुफी ने नासिरूद्दीन कुवाचा के समय में इसका फारसी में अनुवाद किया।
- 'चचनामा' अरबों की सिंध-विजय की जानकारी का मूल स्रोत है।

ताज़-उल-मासिर

- इसकी रचना हसन निज़ामी द्वारा की गई। इस पुस्तक में 1192 ई. से 1228 ई. तक के भारत की घटनाओं का विवरण दिया गया है। इसमें राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ सामाजिक तथा धार्मिक जीवन का उल्लेख भी किया गया है। दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक दिनों का प्रामाणिक इतिहास इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से मिलता है।
- यह अरबी एवं फारसी दोनों भाषाओं में लिखी गई है।

अकबरनामा	अबुल फजल	यह तीन भाग में है। प्रथम भाग में अकबर के पूर्वगामी शासकों का इतिहास एवं दूसरे भाग में अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है तथा तीसरा भाग 'आइन-ए-अकबरी' कहलाता है, जिसमें अकबर द्वारा प्रतिपादित शासन प्रणाली, कानून, नियम आदि की जानकारी है।
पादशाहनामा	मुहम्मद अमीन काज़विनी, अब्दुल हामीद लाहौरी तथा मुहम्मद वारिस	शाहजहाँ के काल का इतिहास। मुहम्मद अमीन काज़विनी ने शाहजहाँ के प्रथम 10 वर्षों का इतिहास लिखा, उसके पश्चात् अगले दस वर्षों का वर्णन **अब्दुल हामिद लाहौरी** ने किया तथा मुहम्मद वारिस ने शाहजहाँ के संयुक्त इतिहास का वर्णन किया, परंतु बीस वर्षों के बाद का इतिहास उसने स्वतंत्र होकर लिखा।
नुस्ख़ा-ए-दिलकुशा	भीमसेन	औरंगज़ेबकालीन दक्षिण भारत के इतिहास का वर्णन तथा मुगल-मराठा संघर्ष का उल्लेख।
बल्लालचरित	आनंद भट्ट	इसमें बंगाल के सेन वंश का वर्णन मिलता है।
पृथ्वीराजरासो	चंदबरदाई	इसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन का वर्णन तथा संयोगिता संग उनके प्रेम का वर्णन एवं मुहम्मद गौरी द्वारा उसे बंदी बनाकर गज़नी ले जाने तथा शब्दभेदी बाण द्वारा मुहम्मद गौरी को मारने का वर्णन है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- पूर्व मध्यकाल में अरबों द्वारा विजय का विस्तृत विवरण **'चचनामा'** नामक ग्रंथ में मिलता है। इसमें मुहम्मद बिन कासिम के भारत अभियान की चर्चा की गई है। इसके लेखक अज्ञात हैं तथा यह अरबी भाषा में लिखा गया है।
- अलबरूनी 11वीं शताब्दी में कई वर्षों तक भारत में रहा। वह मात्र इतिहासकार ही नहीं बल्कि खगोल विज्ञान, भूगोल, औषधि विज्ञान, गणित, दर्शन आदि का भी ज्ञाता था।
- **मुहम्मद हसन निज़ामी** ने सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक की आज्ञा से अरबी भाषा में **ताज-उल-मासिर** की रचना की। यह पुस्तक पद्य और गद्य दोनों ही शैलियों में लिखी गई है।
- **संध्याकरनंदी** ने पालवंश के शासक रामपाल के जीवन-चरित्र पर आधारित **'रामपाल चरित'** नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें बंगाल के **कैवर्त्त विद्रोह** की जानकारी मिलती है।
- सल्तनतकालीन डाक व्यवस्था का विस्तृत विवरण अफ्रीकी यात्री **इब्नबतूता** ने अपने यात्रा वृत्तांत **रेहला** में दिया है। मुहम्मद बिन तुगलक ने इसे अपना दूत बनाकर चीन भेजा था।
- **मलफूजात-ए-तिमूरी**, तुर्की भाषा में लिखित मंगोल आक्रमणकारी **तैमूर** की आत्मकथा है जिसका फारसी अनुवाद **तालिब हुसैनी** ने किया।
- **फिरोज़शाह तुगलक** ने अपनी आत्मकथा **फतूहात-ए-फिरोज़शाही** की रचना की। इसमें उसके द्वारा इस्लाम धर्म के प्रसार के लिये किये गए कार्यों का वर्णन है।
- **इसामी** के ग्रंथ **फुतूह-उस-सलातीन** में 14वीं शताब्दी के दक्षिण भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा मुहम्मद बिन तुगलक के समय दक्षिण भारत में हुए विद्रोहों का वर्णन है।
- **'शाहनामा'** फारसी भाषा का एक महाग्रंथ है जिसकी रचना **फिरदौसी** ने की थी। वह महमूद गज़नवी के दरबार से संबंधित था।
- **शम्स-ए-सिराज अफीफ** ने भी **तारीख-ए-फिरोज़शाही** नामक ग्रंथ की रचना की। इसे सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक का संरक्षण प्राप्त था। इसमें फिरोजशाह तुगलक द्वारा लागू किया गया जागीर प्रथा का भी वर्णन है।

- **जियाउद्दीन बरनी** मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में 17 वर्षों तक उच्च पद पर आसीन था। वह उसकी उदारवादी नीतियों का विरोधी था इसलिये सुल्तान को दयालु तथा रक्त पिपासु दोनों कहा जाता था।
- **अमीर खुसरो**, बलबन से मुहम्मद बिन तुगलक के शासन-काल तक कुल **आठ सुल्तानों के** राजदरबार से जुड़ा रहा। वह फारसी भाषा का भारतीयकरण करने वाला प्रथम कवि था।
- अमीर खुसरो ने **नूह सिपिहर** ग्रंथ में मुबारकशाह खिलजी का चाटुकारितापूर्वक वर्णन किया है तथा इसमें भारत की प्रकृति, जलवायु का वर्णन करते हुए भारत की तुलना स्वर्ग के उद्यानों से की है।
- **बाबरनामा** का अंग्रेज़ी अनुवाद **मैडम बैवरीज** ने तथा उर्दू भाषा में **नासिरुद्दीन हैदर** ने किया था। यह ग्रंथ मध्य एशिया एवं भारत की प्रकृति तथा यहाँ के लोगों के रहन-सहन, खान-पान आदि विषय में जानकारी का प्रमुख स्रोत है।
- **आईन-ए-अकबरी, अबुल फज़ल** का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें प्रारंभिक मुगलकालीन शासन-प्रबंध, नियम-कानून आदि की चर्चा की गई है।
- **मुन्तखाब-उल-लुआब** की रचना **हाशिम खफी खाँ** ने की थी। वह औरंगज़ेब के शासनकाल में उच्च पद पर आसीन था। इसमें 17वीं शताब्दी के भारत की झलक मिलती है। खफी खाँ ने इस पुस्तक को **मुहम्मदशाह** को समर्पित किया था।
- मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत में बारहमासा की रचना की गयी है जो 'नागमती वियोग-वर्णन' के रूप में है।
- 'दास्तान-ए-अमीर-हम्जा' या 'हम्जानामा के चित्रांकन का श्रेय ख्वाजा अब्दुस समद को दिया जाता है, हालांकि ऐसा भी माना जाता है कि इस कार्य को शुरू करने में मीर सैय्यद अली का भी योगदान था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'तुजुक-ए-बाबरी' किस भाषा में लिखा गया था? **56 – 59वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) फारसी (b) अरबी
   (c) तुर्की (d) उर्दू
2. 'दस्तान-ए-अमीर हम्जा' का चित्रांकन किसके द्वारा किया गया? **46वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) अब्दुस समद (b) मंसूर
   (c) मीर सैय्यद अली (d) अबुल हसन
3. 'तबकात-ए-नासिरी' का लेखक कौन था? **42वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) शेख जमालुद्दीन (b) अलबरूनी
   (c) मिनहाज-उस-सिराज (d) जियाउद्दीन बरनी
4. 'हुमायूँनामा की रचना किसने की थी? **42वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) बाबर (b) हुमायूँ
   (c) गुलबदन बेगम (d) जहाँगीर
5. 'बारहमासा' की रचना किसने की? **39वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) अमीर खुसरो
   (b) इसामी
   (c) मलिक मुहम्मद जायसी
   (d) रसखान
6. हुमायूँनामा की रचना गुलबदन बेगम ने किसके आग्रह पर की थी?
   (a) हुमायूँ (b) बाबर
   (c) मुहम्मद हैदर (d) अकबर
7. आईन-उल-मुल्क मुल्तानी ने इनमें से किस शासक के अधीन सेवा नहीं की थी?
   (a) अलाउद्दीन खिलजी (b) मुहम्मद बिन तुगलक
   (c) फिरोज़ तुगलक (d) इल्तुतमिश
8. 'शाहनामा' का लेखक कौन था?
   (a) उत्बी (b) फिरदौसी
   (c) अलबरूनी (d) बरनी
9. निम्न में से कौन-सी रचना अमीर खुसरो की **नहीं** है?
   (a) तुगलकनामा (b) आशिका
   (c) नूह-सिपिहर (d) रेहला
10. अमीर खुसरो निम्नलिखित में से किसके शासनकाल से संबंधित थे?
    (a) अलाउद्दीन खिलजी (b) मुहम्मद बिन तुगलक
    (c) इब्राहिम लोदी (d) फिरोज़शाह
11. निम्नलिखित में कौन प्रसिद्ध ग्रंथ 'किताब-उल-हिन्द' के लेखक हैं?
    (a) हसन निज़ामी (b) जियाउद्दीन बरनी
    (c) अलबरूनी (d) मिनहाज-उस-सिराज

12. अलबरूनी किस आक्रमणकारी के साथ भारत आया था?
(a) मुहम्मद बिन कासिम (b) महमूद गज़नवी
(c) मुहम्मद गोरी (d) बाबर

13. ताज-उल-मासिर के लेखक मुहम्मद हसन निज़ामी किस सुल्तान के समकालीन थे?
(a) मुहम्मद गोरी (b) कुतुबुद्दीन ऐबक
(c) इल्तुतमिश (d) फिरोज़शाह तुगलक

14. मिनहाज-उस-सिराज ने अपनी रचना किस सुल्तान को समर्पित की?
(a) बलबन (b) अलाउद्दीन खिलजी
(c) नासिरुद्दीन महमूद (d) बहरामशाह

15. तारीख-ए-फिरोज़शाही के लेखक कौन हैं?
(a) अलबरूनी (b) मिनहाज-उस-सिराज
(c) शम्से सिराज अफीफ (d) जियाउद्दीन बरनी

16. निम्नलिखित में से किस विद्वान एवं लेखक का जन्म भारतीय भूमि पर हुआ था?
(a) जियाउद्दीन बरनी (b) हसन निज़ामी
(c) अलबरूनी (d) मिनहाज-उस-सिराज

17. निम्नलिखित में किस विद्वान ने मुहम्मद बिन तुगलक को दयालु और रक्त पिपासु कहा था?
(a) इब्नबतूता (b) जियाउद्दीन बरनी
(c) हसन निज़ामी (d) मलिक इसामी

18. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रंथ एक यात्रा-वृत्तांत का ऐतिहासिक ग्रंथ है?
(a) किताब-उल-हिन्द (b) रेहला
(c) फुतुह-उस-सलातीन (d) तबकाते-ए-नासिरी

19. ऐतिहासिक ग्रंथ फतुहात-ए-फिरोज़शाही की रचना किस सुल्तान ने की?
(a) फिरोज़शाह तुगलक (b) मुहम्मद बिन तुगलक
(c) बहमनशाह (d) इल्तुतमिश

20. निम्नलिखित में किस सल्तनतकालीन विद्वान एवं लेखक ने आठ सुल्तानों का शासनकाल देखा था?
(a) जियाउद्दीन बरनी (b) बदायूँनी
(c) अमीर खुसरो (d) मिनहाज-उस-सिराज

21. बाबर ने बाबरनामा की रचना किस भाषा में की थी?
(a) अरबी (b) चगताई तुर्की
(c) फारसी (d) उर्दू

22. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रंथ प्रारंभिक मुगल राजवंश एवं कश्मीर के इतिहास को बताता है?
(a) बाबरनामा (b) तारीख-ए-अकबरी
(c) तारीख-ए-रशीदी (d) हुमायूँनामा

23. तारीख-ए-शेरशाही की रचना किस मुगलकालीन विद्वान ने की थी?
(a) मिर्ज़ा हैदर (b) हसन अली खाँ
(c) अब्बास खाँ शेरवानी (d) रिजाकुल्ला मुश्ताकी

24. मुगलकालीन ऐतिहासिक साहित्यिक स्रोत 'अकबरनामा' की रचना किस विद्वान ने की?
(a) निज़ामुद्दीन अहमद (b) अबुल फज़ल
(c) अमीर खुसरो (d) अहमद लाहौरी

25. निम्नलिखित में कौन-सा ऐतिहासिक ग्रंथ अकबर के शासनकाल का आलोचनात्मक वर्णन करता है?
(a) अकबरनामा (b) तारीख-ए-अकबरी
(c) तारीख-ए-बदायूँनी (d) तबकात-ए-अकबरी

26. मुगल बादशाह जहाँगीर ने किस नाम से स्वयं की जीवनी लिखी?
(a) इकबालनामा-ए-जहाँगीरी
(b) पादशाहनामा
(c) तुजुक-ए-जहाँगीरी
(d) फतुहात-ए-जहाँगीरी

27. निम्नलिखित में से कौन ऐतिहासिक ग्रंथ 'पादशाहनामा' के रचनाकार नहीं हैं?
(a) मुहम्मद काजविनी (b) हमीद लाहौरी
(c) हाशिम खफी खाँ (d) मुहम्मद वारिस

28. 17वीं शताब्दी की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक रचना 'नुस्खा-ए-दिलकुशा' के रचनाकार कौन हैं?
(a) अब्बास खाँ सरवानी (b) सुजानराय खत्री
(c) खफी खाँ (d) भीमसेन

उत्तरमाला

1. (c)	2. (a)	3. (c)	4. (c)	5. (c)	6. (d)	7. (d)	8. (b)	9. (d)	10. (a)
11. (c)	12. (b)	13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (a)	17. (b)	18. (b)	19. (a)	20. (c)
21. (b)	22. (c)	23. (c)	24. (b)	25. (c)	26. (c)	27. (c)	28. (d)		

अध्याय
2

भारत में तुर्कों का आगमन
(Arrival of Turks in India)

तुर्कों के आक्रमण के पूर्व अरबों ने भारत पर आक्रमण किया, किंतु भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का श्रेय तुर्कों को जाता है। मुस्लिम आक्रमण के समय भारत में एक बार पुनः विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन की परिस्थितियाँ सक्रिय हो उठी। तुर्क आक्रमण भारत में कई चरणों में हुए। प्रथम चरण का आक्रमण 1000 से 1027 ई. के बीच गज़नी के शासक महमूद गज़नवी द्वारा किया गया। इसके पूर्व सुबुक्तगीन (महमूद के पिता) की लड़ाई हिन्दूशाही शासकों के साथ हुई थी, किन्तु उसका क्षेत्र सीमित था। भारत के गुजरात क्षेत्र तक महमूद ने अपना शासन स्थापित किया, लेकिन उत्तरी भारत के शेष क्षेत्र अभी तुर्क प्रभाव से बाहर थे। कालांतर में गौर के शासक शिहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी ने पुनः भारत में सैनिक अभियान प्रारंभ किया। 1175 से 1206 ई. के बीच उसने और उसके दो प्रमुख सेनापतियों (ऐबक और बख्तियार खिलजी) ने गुजरात, पंजाब से लेकर बंगाल तक के क्षेत्र को जीतकर सत्ता स्थापित की। किंतु 1206 ई. में गौरी की मृत्यु के पश्चात् तुर्क साम्राज्य कई हिस्सों में बँट गया और आगे चलकर भारत में दिल्ली सल्तनत के नाम से तुर्क साम्राज्य स्थापित हुआ।

2.1 तुर्कों के आक्रमण से पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति *(Political situation of India before the invasion of Turks)*

- मुल्तान तथा सिंध दोनों क्षेत्र 8वीं सदी के आरंभ में ही अरबों द्वारा विजित कर लिये गए थे। सिंध में अरबों की सत्ता के अवशेष अब भी बचे हुए थे।
- **हिन्दूशाही** राजवंश उत्तर-पश्चिम भारत का विशाल हिन्दू राज्य था, जिसकी सीमा कश्मीर से मुल्तान तक तथा चिनाब नदी से लेकर हिन्दुकुश तक फैली हुई थी। महमूद ने इसकी राजधानी **वैहिंद** पर आक्रमण कर दिया। यहाँ का शासक **जयपाल** था जिसने पराजित होने पर आत्महत्या कर ली।
- उत्तरी भारत में स्थित कश्मीर का क्षेत्र महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय से राजनीतिक अव्यवस्था से ग्रसित था। यहाँ की वास्तविक शासिका क्षेमेन्द्र गुप्त की पत्नी **दीद्दा** थी।
- इसके अतिरिक्त मुस्लिम आक्रमण के समय उत्तरी भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व था। जैसे– सिंध, मुल्तान, पंजाब, दिल्ली, बंगाल आदि।
- भारत का इस समय बाह्य देशों के साथ कोई विशेष संबंध नहीं था। राज्यों का आर्थिक आधार कमज़ोर था, जिसके फलस्वरूप सैन्य आधार भी कमज़ोर हो गया था।

राजनीतिक विभाजन की यह समस्या केवल राजपूत राज्यों तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि इसका परिणाम देश के सामान्य जनजीवन पर भी पड़ा था। उत्तर भारत में राजनीतिक एकता का पूर्णतः अभाव था। इस समय देश में छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व था, इस कारण से इस समय कोई भी एक राज्य या शासक इतना शक्तिशाली नहीं था जो इन्हें जीतकर एकछत्र राज्य स्थापित कर सके। आंतरिक कलह ने इन्हें कमज़ोर बना दिया था और विदेशी आक्रमण का प्रभावशाली ढंग से विरोध करना इनके लिये संभव नहीं था। इस स्थिति के लिये राजपूत शासक स्वयं भी ज़िम्मेदार थे, क्योंकि ये हमेशा आपस में संघर्षरत रहते थे। आंतरिक अशांति की इस परिस्थिति ने अंततः राजपूत शासकों का अस्तित्व समाप्त कर दिया।

2.2 महमूद गज़नवी का आक्रमण *(Invasion of Mahmood Ghaznavi)*

महमूद गज़नवी, गज़नी के शासक **सुबुक्तगीन** का पुत्र था। सन् 998 ई. में वह गज़नी का सुल्तान बना। महमूद गज़नवी प्रथम शासक था जिसने **सुल्तान** की उपाधि धारण की। वह एक दूरदर्शी एवं महत्त्वाकांक्षी शासक था। उसने भारतीय

अध्याय
3

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) [(Delhi Sultanate 1206-1526 AD.)]

सन् 1206 ई. में मुहम्मद गौरी की आकस्मिक मृत्यु के कारण उत्तराधिकारी के संबंध में कोई निश्चित निर्णय नहीं लिया जा सका। गौरी का कोई पुत्र नहीं था, बल्कि उसके कई दास थे, उन दासों में तीन की स्थिति लगभग एकसमान थी। अतः उन तीनों ने आपस में उसके साम्राज्य को बाँट लिया। इसके अंतर्गत यल्दौज को गज़नी का राज्यक्षेत्र, कुबाचा को सिंध और मुल्तान का क्षेत्र तथा कुतुबुद्दीन ऐबक को भारतीय राज्यक्षेत्रों पर अधिकार प्राप्त हुआ।

सन् 1206 ई. से 1290 ई. तक उत्तर भारत के कुछ भागों पर जिन तुर्क शासकों ने शासन किया उन्हें गुलाम वंश, मामलुक वंश, इल्वारी वंश व प्रारंभिक तुर्क आदि नामों से जाना जाता है।

3.1 गुलाम वंश *(Slave/Gulam Dynasty)*

तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में तुर्कों द्वारा भारत में स्थापित प्रथम साम्राज्य को **गुलाम वंश** का नाम दिया गया। गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी, जो मुहम्मद गौरी का एक प्रमुख गुलाम था तथा आरम्भिक तुर्क साम्राज्य को सुदृढ़ करने वाले सुल्तान इल्तुतमिश, बलबन आदि किसी न किसी शासक के गुलाम ही थे।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 - 1210 ई.) *[Kutubuddin Ebek (1206-1210 A.D.)]*

- कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है। वह भारत में स्थापित तुर्क साम्राज्य का प्रथम शासक था।
- शासक बनने के बाद ऐबक ने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की, न उसने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और न ही अपने नाम के सिक्के चलाए बल्कि वह केवल **'मलिक'** और **'सिपहसालार'** की पदवियों से ही खुश रहा।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को सन् 1208 में दासता से मुक्ति मिली। उसने लाहौर से ही शासन का संचालन किया तथा लाहौर ही उसकी राजधानी थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक एक वीर एवं उदार हृदय वाला सुल्तान था, वह लाखों में दान दिया करता था। अपनी असीम उदारता के कारण उसे **'लाखबख्श'** कहा गया।
- ऐबक ने **हसन निजामी** और **फक्र-ए-मुदब्बिर** जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया तथा प्रसिद्ध सूफी संत **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** के नाम पर दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव रखी जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया।

गुलाम वंश के शासक		
क्र.सं.	शासक	शासनकाल
1.	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206 - 1210 ई.
2.	आरामशाह	1210 - 1211 ई.
3.	शम्सुद्दीन इल्तुतमिश	1211 - 1236 ई.
4.	रुकनुद्दीन फिरोज़शाह	1236 ई.
5.	रज़िया सुल्तान	1236 - 1240 ई.
6.	मुइजुद्दीन बहरामशाह	1240 - 1242 ई.
7.	अलाउद्दीन मसूदशाह	1242 - 1246 ई.
8.	नासिरुद्दीन महमूद	1246 - 1265 ई.
9.	गयासुद्दीन बलबन	1266 - 1286 ई.
10.	मोइजुद्दीन कैकुबाद	1287 - 1290 ई.
11.	कैयूमर्स	1290 ई.

- उसने दिल्ली में ही **'कुव्वत-उल-इस्लाम'** मस्जिद का निर्माण करवाया जिसे भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित प्रथम मस्जिद माना जाता है तथा अजमेर स्थित **'अढ़ाई दिन का झोपड़ा'** नामक मस्जिद का भी निर्माण उसी ने करवाया।
- सन् 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से अचानक गिर जाने के कारण ऐबक की अकस्मात् ही मृत्यु हो गई।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसका अयोग्य एवं अनुभवहीन पुत्र आरामशाह शासक बना जिसके कारण अमीरों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। बंगाल, अलीमर्दान खाँ के अधीन स्वतंत्र हो गया। ऐसी परिस्थितियों में प्रमुख तुर्क, अमीर अली इस्माइल ने ऐबक के दामाद इल्तुतमिश को सुल्तान बनने के लिये आमंत्रित किया।
- इल्तुतमिश ने 1210 ई. में आरामशाह को पराजित किया और स्वयं सल्तनत का सुल्तान बना।

अध्याय
4

क्षेत्रीय शक्तियाँ: 13वीं-15वीं सदी
(Regional Powers : 13th-15th Century)

मध्य एशियाई आक्रमणकारी तैमूर लंग ने 1398 ई. में दिल्ली सल्तनत पर आक्रमण किया। उसके आक्रमण ने जहाँ एक ओर तुगलक राजवंश का पतन कर दिया, वहीं दूसरी ओर दिल्ली सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया तीव्र हो गई। तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् केन्द्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर ही कई क्षेत्रीय शक्तियों का उद्भव हुआ। इन क्षेत्रीय शक्तियों में उत्तरी भारत में **मालवा, जौनपुर, मेवाड़, कश्मीर, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा व असम** प्रमुख थे जबकि दक्षिण भारत में **विजयनगर और बहमनी** प्रमुख राज्य थे।

इन क्षेत्रीय शक्तियों की स्वतंत्रता तब तक (लगभग 200 वर्ष) बनी रही जब तक कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलों का आगमन नहीं हुआ। इस समय उद्भव हुई क्षेत्रीय शक्तियों की सबसे बड़ी खामी थी कि ये आपस में निरंतर एक-दूसरे के साथ संघर्षरत थे, जैसे– विजयनगर और बहमनी साम्राज्य, मालवा एवं जौनपुर तथा बंगाल का राज्य आदि। यही कारण है कि इन राज्यों द्वारा कभी भी विस्तृत साम्राज्य की स्थापना नहीं की जा सकी।

मालवा *(Malwa)*

मालवा का राज्य नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित था। इस प्रांत को सन् 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली सल्तनत में शामिल किया था, परन्तु तुगलक वंश के पतन के दौरान तुगलक गवर्नर **दिलावर खाँ** ने सन् 1401 ई. में स्वतंत्र **मालवा** साम्राज्य की स्थापना की।

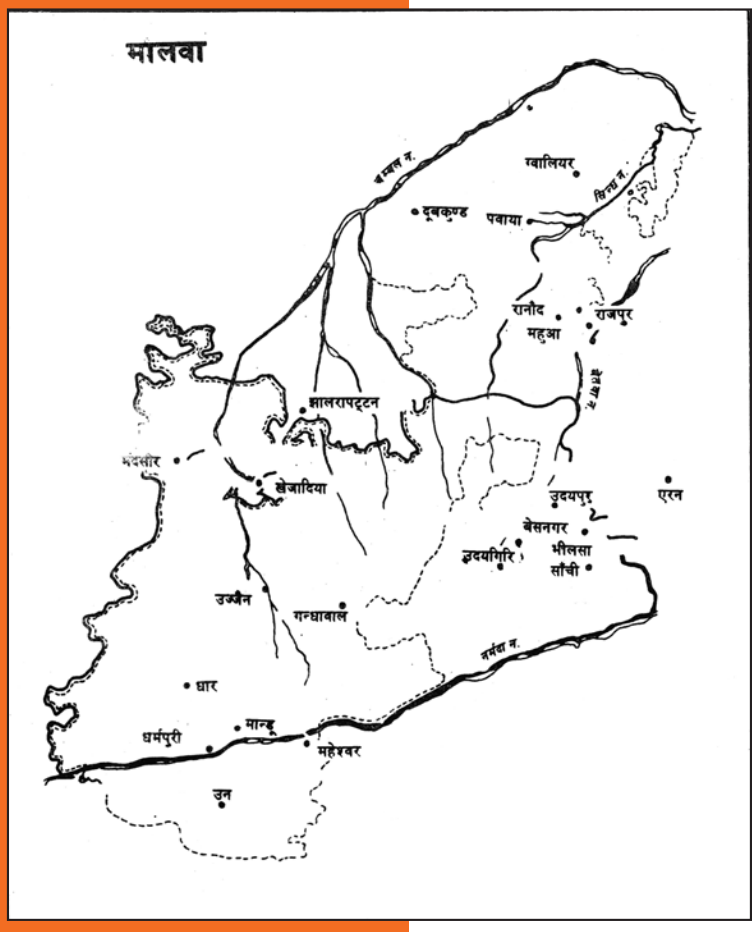

मालवा आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टि से समृद्ध राज्य था। पठारी क्षेत्र होने के कारण इसका सामरिक महत्त्व भी था। यहाँ के सुल्तानों ने राजधानी **माण्डू** में अनेक भव्य एवं सुन्दर महलों, मस्जिदों एवं मकबरों का निर्माण करवाया था। गुजरात एवं जौनपुर मालवा के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी राज्य थे जिनमें आपस में हमेशा प्रतिस्पर्द्धा होती थी।

- **दिलावर खाँ** का वास्तविक नाम हुसैन था। उसने अपनी पुत्री का विवाह खानदेश के शासक फारुकी के बेटे अली शेर खिलजी के साथ किया तथा गुजरात के शासक **मुजफ्फर शाह** के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखते हुए मालवा को आक्रमण से बचाया।
- मालवा का प्रसिद्ध शासक **हुशंगशाह** था। उसने धार के स्थान पर **माण्डू** को साम्राज्य की राजधानी बनाया।
- हुशंगशाह एक अत्यंत लोकप्रिय शासक था, उसने बहुसंख्यक हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई तथा अनेक हिन्दुओं को मालवा में बसने के लिये प्रेरित किया।

अध्याय
5

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य (Vijayanagar And Bahmani Empire)

14वीं शताब्दी के प्रथम चरण या मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत दिल्ली सल्तनत में शामिल किया जा चुका था। उसने दक्षिणी प्रांतों में मज़बूत सत्ता स्थापित करने के लिये कुछ प्रयास भी किये, जैसे– विजित प्रदेशों को प्रांतों में विभाजित किया, दौलताबाद में नई राजधानी बनाई परंतु सारे प्रयास असफल हो गए और दक्षिण के क्षेत्रों ने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह के क्रम में दक्षिण भारत में दो नवीन साम्राज्यों का उदय हुआ विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य। यद्यपि इन दोनों राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपाय किये गए परंतु दोनों के बीच तब तक आपसी संघर्ष चलता रहा, जब तक कि बहमनी राज्य का विघटन नहीं हो गया। इस प्रकार दक्षिण भारतीय इतिहास में विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

5.1 विजयनगर साम्राज्य *(Vijayanagar Empire)*

विजयनगर राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों के द्वारा 1336 ई. में की गई थी। कहा जाता है कि **हरिहर** और **बुक्का** वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के पारिवारिक संबंधी या सामंत थे। तुगलकों ने वारंगल पर आक्रमण कर राज्य को नष्ट कर दिया तब दोनों भाई (हरिहर और बुक्का) **कांपिली** अथवा **अनेगोंडी** (वर्तमान कर्नाटक) राज्य में जाकर रहने लगे। एक विद्रोही को शरण देने के कारण कांपिली पर मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण कर दिया तथा विजयोपरान्त हरिहर और बुक्का को बंदी बना लिया गया। इन दोनों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये विवश किया गया उसके उपरान्त इन्हें विद्रोहियों के दमन के लिये दक्षिण भारत भेजा गया, परंतु दोनों भाइयों ने दक्षिण भारत में प्रारम्भ हुई तुर्क सत्ता के विरोधी गतिविधियों में योगदान दिया तथा इस्लाम धर्म को त्यागकर शृंगेरी के प्रतिष्ठित गुरु **विद्यारण्य** की प्रेरणा से पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार कर तुंगभद्रा नदी के किनारे सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थान को विजयनगर के नाम से बसाया और शासन करने लगे। 1336 ई. में हरिहर विजयनगर का शासक बना। हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित वंश को उनके पिता संगम के नाम पर **संगम वंश** कहा गया।

प्रमुख राजवंश *(Major dynasty)*

राजवंश	संस्थापक	शासनकाल
संगम वंश	हरिहर एवं बुक्का	1336–1485 ई.
सालुव वंश	नरसिंह सालुव	1485–1505 ई.
तुलुव वंश	वीर नरसिंह	1505–1570 ई.
अरावीडु वंश	तिरुमल्ल	1570–1652 ई.

संगम वंश	
शासक	**शासनकाल**
हरिहर प्रथम	1336–1356 ई.
बुक्का प्रथम	1356–1377 ई.
हरिहर द्वितीय	1377–1406 ई.
बुक्का द्वितीय	1406 ई.
देवराय प्रथम	1406–1422 ई.

अध्याय
6

भक्ति एवं सूफी आंदोलन
(Bhakti and Sufi Movement)

मध्यकालीन भारत के प्रारंभ में संतों तथा सूफियों के प्रयासों से हिन्दू एवं इस्लाम धर्म में नवीन शक्ति एवं गतिशीलता का संचार हुआ, इसे भक्ति एवं सूफी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। भक्ति आंदोलन का प्रारंभ उपनिषदों, भगवद्गीता, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों के आधार पर हुआ, जबकि सूफी आंदोलन इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध तथा तुर्की शासन में व्याप्त घुटन एवं उदासी को दूर करने के लिये हुआ।

भक्ति एवं सूफी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना तथा प्रेम और उदारता का संदेश देना था। इन आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इन्हें न तो राजकीय संरक्षण मिला और न ही राजनीतिक उतार-चढ़ाव से इनमें कोई विचलन आया।

6.1 भक्ति आंदोलन *(Bhakti Movement)*

भक्ति आंदोलन का विकास मुख्यतः दो चरणों में हुआ। पहले चरण की शुरुआत दक्षिण भारत में 8वीं शताब्दी से हुई जो 13वीं शताब्दी तक चला। जबकि दूसरे चरण की शुरुआत 13वीं शताब्दी में हुई और यह 16वीं शताब्दी तक चला। इस चरण का प्रमुख क्षेत्र उत्तरी भारत रहा।

भक्ति आंदोलन के संतों द्वारा हिन्दू धर्म में व्याप्त विसंगतियों के सुधार हेतु काफी प्रयास किये गए। दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को शुरू करने का श्रेय नयनार और अलवार संतों को प्राप्त है। नयनार, शैव धर्म के अनुयायी थे वहीं अलवार, वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। इन नयनार तथा अलवार संतों द्वारा बौद्ध और जैन धर्म का विरोध किया गया तथा भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग बताया गया। उन्होंने कर्मकाण्डों और अंधविश्वासों की निंदा की तथा अपने उपदेश जन-समुदाय को स्थानीय भाषा में दिये। उनका यह एक समतावादी आंदोलन था, जिसमें जाति-धर्म तथा ऊँच-नीच का प्रबल विरोध किया गया था। प्रथम चरण के भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत निम्नलिखित थे:-

शंकराचार्य *(Shankaracharya)*

- शंकराचार्य को भक्ति आंदोलन का प्रथम संत माना जाता है। उनका जन्म **केरल के कलाडी** में 788 ई. में हुआ था।
- इनके दर्शन का आधार वेदांत अथवा उपनिषद् था। उन्होंने भारत में ब्रह्म एवं ज्ञानवाद का प्रसार किया, इसलिये उनके सिद्धांत एवं दर्शन को **अद्वैतवाद** के नाम से जाना जाता है।
- शंकराचार्य ने भारत में धर्म की एकता के लिये तथा पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिये भारत के चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किये। सन् 820 ई. में हिमालय की तलहटी में स्थित **केदारनाथ** में मात्र 32 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

दिशा	स्थान	मठ
उत्तर	बद्रीनाथ	ज्योतिर्मठ
दक्षिण	शृंगेरी	शृंगेरी मठ
पूर्व	पुरी	गोवर्धन मठ
पश्चिम	द्वारका	शारदा मठ

रामानुज *(Ramanuj)*

- रामानुज 12वीं शताब्दी के प्रमुख संत थे, जिनका जन्म **तमिलनाडु के श्रीपेरूम्बुदुर** में हुआ था। वे सगुण धारा के **वैष्णव** संत थे।
- उन्होंने शंकराचार्य के ज्ञानवादी अद्वैत दर्शन के विरोध में **विशिष्टाद्वैतवाद** का दर्शन दिया तथा ज्ञान के स्थान पर भक्ति को महत्ता प्रदान की।
- उन्होंने मनुष्य की समानता पर बल दिया और जाति व्यवस्था की भर्त्सना की और अपने क्रियाकलापों के लिये **काँची** और **श्रीरंगपट्टनम** में मुख्य केन्द्र स्थापित किये।

अध्याय
7

मुगल साम्राज्य और शेरशाह (Mughal Empire and Shershah)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलों का आगमन एक नवीन युग का परिचायक था। यद्यपि भारत में मुगल वंश का संस्थापक **बाबर** विदेशी था और मंगोल तथा चंगेज खाँ जैसे आक्रमणकारियों का वंशज था, परंतु उसके और उसके वंशज द्वारा एक स्थिर एवं शांतिपूर्ण सत्ता स्थापित की गई तथा उसने लाखों लोगों पर उनकी मर्जी से शासन किया।

सन् 1405 ई. में तैमूरलंग की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी शाहरुख मिर्जा के काल में मंगोल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इस राजनीतिक शून्यता को भरने के लिये कई नए राज्यों की स्थापना **ट्रांस-ऑक्सियाना** के क्षेत्रों में हुई, जैसे- **उज़्बेक राज्य, सफवी राज्य** और **मुगल राज्य**। मुगल राज्य की स्थापना उमर शेख मिर्जा के नेतृत्व में हुई, जो फरगना नामक छोटे राज्य के शासक थे। सन् 1494 ई. में एक दुर्घटना में उमर शेख की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका पुत्र बाबर मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बना। बाबर बड़ा महत्त्वाकांक्षी शासक था। वह फरगना में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के बाद तैमूर की राजधानी समरकन्द को भी जीतना चाहता था और 1496 ई. में समरकन्द पर अधिकार भी कर लिया, परन्तु इस क्रम में उससे फरगना भी हाथ से निकल गया।

उज़्बेक सरदार तथा सफवी वंश के द्वारा बार-बार पराजय ने बाबर को अपने पैतृक सिंहासन को प्राप्त करने के विचार को त्याग कर भारत में अपना भाग्य अजमाने के लिये विवश कर दिया। इसी क्रम में बाबर ने सन् 1504 ई. में काबुल पर अधिकार कर लिया तथा 1507 ई. में पहली बार मिर्ज़ा की जगह **पादशाह** की उपाधि धारण की। बाबर ने जिस समय भारत पर आक्रमण किया, उस समय भारत में बंगाल, मालवा, गुजरात, सिंध, कश्मीर, मेवाड़, खानदेश, विजयनगर, बहमनी की रियासतें एवं दिल्ली स्वतंत्र राज्य थे।

7.1 मुगल बादशाह *(Mughal Emperor)*

बाबर के आक्रमण के समय दिल्ली में लोदी वंश के शासक इब्राहिम लोदी का शासन था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी तथा इब्राहिम के चाचा आलम खाँ लोदी ने दिया था। इस निमंत्रण से ही उसे दिल्ली सल्तनत के आंतरिक मतभेद का पता चल चुका था और कहा जाता है कि इसी समय मेवाड़ का शासक **राणा सांगा** के राजदूत ने बाबर को भारत में आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया था।

बाबर (1526-1530 ई.) *[Babar (1526-1530 A.D.)]*

- भारत में मुगल वंश की स्थापना बाबर ने सन् 1526 ई. के पानीपत के युद्ध की विजय के बाद की थी, परन्तु इस विजय से पूर्व वह भारत में चार बार आक्रमण कर चुका था।
- बाबर ने भारत के विरुद्ध प्रथम अभियान 1518-1519 ई. में **यूसुफजाई जाति** के विरुद्ध किया और इस अभियान में बाजौर और भेरा के किले को अपने अधिकार में कर लिया। इस किले को जीतने में उसने सर्वप्रथम बारूद और तोपखाने का प्रयोग किया।

पानीपत का प्रथम युद्ध

पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर और इब्राहिम लोदी के मध्य अप्रैल 1526 ई. में हुआ, जिसे बाबर ने अपने कुशल सेनापतित्व और तोपखाना के प्रयोग द्वारा जीत लिया। उसने इब्राहिम लोदी की एक विशाल सेना को पराजित कर भारत में अपनी सत्ता स्थापित की थी। इस युद्ध में बाबर ने उज़्बेकों की युद्ध नीति **'तुलगमा युद्ध पद्धति'** तथा तोपों को सजाने की उस्मानी विधि का प्रयोग किया था।

इस युद्ध की गणना भारतीय इतिहास में एक निर्णायक युद्ध के रूप में होती है। इब्राहिम लोदी युद्ध स्थल में ही मारा गया और बाबर को दिल्ली तथा आगरा तक के क्षेत्र प्राप्त हो गए। साथ ही इब्राहिम लोदी के खजाने पर भी उसका नियंत्रण स्थापित हो गया। इससे बाबर की आर्थिक स्थिति मज़बूत हुई और वह आगे का युद्ध भी जीत सका।

अध्याय
8

मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

मुगल साम्राज्य के पतन के दौरान ही मराठा शक्ति का उदय हुआ। मराठों के उदय में सर्वप्रथम योगदान क्षेत्र-विशेष की भौगोलिक परिस्थितियों का था। मराठों का मूल निवास-क्षेत्र मराठवाड़ा तीन भागों में विभक्त था। पहला सह्याद्रि पर्वत से दक्षिण तटवर्त्ती भाग दूसरा सह्याद्रि का पर्वतीय क्षेत्र और तीसरा पूर्वी मैदान का पहाड़ी एवं जंगली क्षेत्र। सह्याद्रि के तटवर्ती क्षेत्र को कोंकण एवं पर्वतीय क्षेत्र को मावला के नाम से जाना जाता है। यहाँ कृषि कार्य कठिन था। प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण मराठों में साहस, कठोर परिश्रम, आत्मसंयम जैसे गुणों का विकास हुआ। अपनी आजीविका को चलाने के लिये मराठे लूट-पाट का सहारा लेते थे। मराठों में एकता की भावना जगाने में मराठी भाषा का सर्वाधिक योगदान रहा।

भक्ति आन्दोलन के सन्तों जैसे ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम और रामदास की शिक्षाओं ने मराठा राज्य के उदय में सहयोग दिया। ये सन्त जाति प्रथा का विरोध करते थे और स्थानीय मराठी भाषा में उपदेश देते थे। शिवाजी के गुरु रामदास ने महाराष्ट्र धर्म को प्रचारित किया।

मोडी लिपी

मोडी उस लिपि का नाम है, जिसका प्रयोग सन् 1950 ई. तक महाराष्ट्र की प्रमुख भाषा मराठी को लिखने के लिये किया जाता था। मोडी शब्द की उत्पत्ति फारसी के शब्द शिकस्त के अनुवाद से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'तोड़ना या मोड़ना' इसे हेमादपंत (या हेमाद्री पंडित) ने महादेव यादव और रामदेव यादव के शासनकाल के दौरान (1260-1309 ई.) विकसित किया था।

दक्षिण की राजनीतिक स्थितियों ने भी मराठों के उत्थान में सहयोग दिया। बहमनी राज्य के विखण्डन तक मराठे अनुभवी लड़ाकू जाति के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। सर्वप्रथम मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में अहमदनगर के प्रधानमंत्री मलिक अम्बर ने मराठों का सहयोग प्राप्त किया तथा मराठों को अपनी सेना में शामिल किया। सर्वप्रथम शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले अहमदनगर की सेना में शामिल हुए फिर वह बीजापुर के सूबेदार हो गए। 1620 ई. में शाहजी जहाँगीर की सेवा में चले गए। इस प्रकार जहाँगीर के काल में मराठे पहली बार मुगलों की सेवा में आए। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने शाहजी को 5000 का मनसब प्रदान किया, परन्तु शीघ्र ही शाहजी ने मुगलों का साथ छोड़ दिया और पुनः अहमदनगर आ गए। 23 जनवरी 1664 ई. में शाहजी की मृत्यु हो गई।

8.1 उदय के कारण *(Cause of Rise)*

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मराठा साम्राज्य का उदय कोई एक घटना नहीं, बल्कि यह विभिन्न कारकों का सम्मिलित प्रभाव था। उन कारकों में जहाँ मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, यहाँ के भक्ति आंदोलन तथा औरंगजेब की नीतियों का योगदान रहा, वहीं शिवाजी के चमत्कारिक व्यक्तित्व ने भी उनके उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मराठा साम्राज्य के उदय के कारण

- भौगोलिक क्षेत्र
- भक्ति आन्दोलन का प्रभाव
- औरंगजेब की नीति

भौगोलिक क्षेत्र *(Geographical region)*

एम.जी. रानाडे ने अपनी पुस्तक **'द राइज़ ऑफ मराठा पॉवर'** (The rise of Maratha power) में मराठवाड़ा के ऊबड़-खाबड़ भौगोलिक क्षेत्र को उनके उदय का प्रधान कारण माना है।

भक्ति आन्दोलन का प्रभाव *(Influence of bhakti movement)*

14वीं शताब्दी के भक्ति आन्दोलन की मराठों के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। मराठा सन्तों ने एक ही भाषा में अपने उपदेश देकर तथा उच्च और निम्न वर्ग को एक-साथ जोड़कर राष्ट्र की भावना भर दी। शिवाजी के गुरु, समर्थ रामदास ने **दासबोध** नामक एक पुस्तक लिखी, जिसका प्रभाव शिवाजी पर पड़ा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456